

कोकिला आई है ( १०४ )

साईं साहिब की जन्म वाधाई है।  
चारों ओर आनंद धुनि छाई है॥

आज मैया के आनंद का नहीं पार है  
आया गोदी में बालक जो करतार है  
सब सुक्रतों की निधी मैया पाई है॥

देखि चंद्र वदन मैया फूल रही है  
मानो प्रेम हिण्डोले में झूल रही है  
कैसा सुन्दर सुवन सुखदाई है॥

सुर जै जै मनाइ फूल बरसाते हैं  
जड़ चेतन सभी हींय हर्षति हैं  
आइ गुर देव चोली पहनाई है॥

सब नाचें और गावें नर नारियां  
होके गद् गद् करती हैं किलकारियां  
देके परिक्रमा ताड़ी बजाई है॥

मैया छाती से अमृत की धार वर्षे  
पी पी के ललनवा बहुत हर्षे  
प्यारी चितवन से मैया हुलसाई है॥

भई आकाश वाणी मैया धन्य है  
भया बालक अनूपम यह उत्पन है  
संत रूप में कोकिला आई है॥